# नए भारत की चुनौतियां और आरएसएस

पेज छह का शेष

इस तरह के लोग यह भूल जाते हैं कि मोदी भाषण नहीं देते, वे तो मैलोड्रामा करते हैं। यह नाटक है. उनके स्टीरियोटाइप नाटकीय लहजे से जनता का खूब मनोरंजन होता है।

दिलचस्प बात यह है कि आरएसएस के नेतागण और फेसबुक बटुक देश के लिए बिना कुछ मूल्यवान किए, कह रहे हैं "देश हमारा -देश हमारा."

संघियो, गाल बजाने से देश को अपना नहीं बना सकते। फेसबुक एकाउंट खोलने, या पीएम पद पाने से देश आपका नहीं हो सकता। देश को अपना बनाने के लिए कुछ करो, कुर्बानी दो, बलिदान करो, कोई महान बुक लिखो, गधों का कोई देश नहीं होता. मनुष्यों का देश होता है, मानवता अर्जित करो, नया सृजित करो।

ठंड़े दिमाग से सोच रहा था कि किसी आरएसएस के बंदे ने कोई बेहतरीन रिसर्च आज तक क्यों नहीं की, कोई संघी नेता आतंकियों के हाथों क्यों नहीं मारा गया, कोई संघी नेता साम्प्रदायिक दंगे में क्यों नहीं मरा, किसी संघी को देशभक्ति के लिए ब्रिटिशकाल में फाँसी क्यों नहीं हुई, यह कैसे हुआ कि देश में साम्यवादियों का योगदान इस मामले में लाख गुना ज्यादा है. साम्यवादियों ने हर क्षेत्र में ऊच्चकोटि के मानदण्ड बनाए. साहित्य से लेकर संस्कृति तक, सिनेमा से लेकर चित्रकला तक, नाटक से लेकर लोकनृत्य तक, ब्रिटिशकाल में जेल जाने से लेकर फाँसी चढ़ने तक हर मामले में देश के लिए कर गुजरने की जो तमन्ना और साधना साम्यवादियों ने दिखाई है वह अतुलनीय है।

नोटबंदी के बाद लोकतंत्र में गंदगी बढ़ी है, देश भ्रष्टाचार की नई ऊँचाईयों पर पहुँचा है, इस ऊँचाई पर पहुंचाने में भाजपा-मोदी-आरएसएस-कारपोरेट घरानों की बड़ी भूमिका है। नोटबंदी का अभियान कुछ साल पहले चले भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन का विलोम है,यह उन तमाम चीजों का नकार है जिनको उस आंदोलन ने केन्द्र में रखा था, नोटबंदी ने ईमानदारी को बेमानी बना दिया और यही इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि है।

कांग्रेस पार्टी दूध की धुली पार्टी नहीं है, यह बात दीगर है कि इस समय वह विपक्ष में है और जनता बेहद परेशान है. मोदी का शासन में आना,समूची नौकरशाही का साम्प्रदायिकीकरण एकदिन में नहीं हुआ। कांग्रेस ने कभी भी साम्प्रदायिकता के खिलाफ दो टूक और अहर्निश संघर्ष नहीं चलाया. कांग्रेस का आरएसएस और नरेन्द्र मोदी को लेकर ढुलमुल रवैय्या रहा है। कांग्रेस इतने दिन शासन में रही लेकिन उसने कानून के शासन के नाम पर साम्प्रदायिक और प्रतिक्रियावादी ताकतों की प्रच्छन्न मदद की. गुजरात के दंगे, उसके बाद वहां की समूची नौकरशाही के साम्प्रदायिकीकरण को कभी बड़ा राष्ट्रीय एजेण्डा नहीं बनाया गया। यहां तक कि सुप्रीमकोर्ट ने हस्तक्षेप करके सन् 2002 के दंगों के बारे में सबसे सख्त रूख अपनाया लेकिन कांग्रेस लगातार नरम साम्प्रदायिकता का कार्ड खेलती रही. इतने बड़े दंगे और राज्य में मुसलमानों पर अकथनीय अत्याचारों के बावजूद कांग्रेस ने साम्प्रदायिकता के खिलाफ कठोर कदम नहीं उठाए, लगातार साम्प्रदायिक चालें चलकर भाजपा से बढ़त हासिल करने की कोशिश की, इसने अंततः कांग्रेस को साम्प्रदायिकता की ताकत को बढाने में मदद की।

हाल ही में कांग्रेस के नेताओं का पद्मावत फिल्म का विरोध साफतौर पर दरशाता है कि कांग्रेस धर्मनिरपेक्षता और अभिव्यक्ति की आजादी की रक्षा करने की बजाय, वोट की राजनीति करने में ज्यादा दिलचस्पी ले रही है. कांग्रेस के लिए धर्मनिरपेक्षता एक आवरण मात्र है, उसने धर्मनिरपेक्षता के खिलाफ, सक्रिय आरएसएस के खिलाफ कभी कोई अभियान विगत 70 सालों में नहीं चलाया। यहां तक कि बाबरी मसजिद विध्वंस के बाद भी नहीं चलाया, 2002 के गुजरात के दंगों के बाद भी नहीं चलाया, हाल ही में मोदी के हाथों करारी हार के बाद भी कांग्रेस अपने को धर्मनिरपेक्ष की बजाय हिंदूदल बनाने में लगी है, सभी किस्म की प्रतिगामी ताकतों को वोट की राजनीति के लिए एकजुट कर रही है, कर्नाटक में उसकी वैचारिक हरकतें कांग्रेस के अंदर सक्रिय प्रतिक्रियावादी ताकतों की शक्ति को दरशाती हैं.।

हनले के बावजूद कांग्रेस ने वहां जमीनी स्तर पर प्राणघातक संगठनों के सफाए के लिए कोई कदम नहीं उठाए, जिस संगठन ने लेखकों की हत्या की उस पर पाबंदी तक नहीं लगायी, उसके विचारों को गंभीरता से एक्सपोज तक नहीं किया।

कांग्रेस का गेम प्लान साफ है- "यदि हिंदू बनने,साम्प्रदायिक बनने, पृथकतावादी बनने से वोट मिलता है तो वैचारिक राजनीतिक तौर पर इन संगठनों का साथ दो।"

कांग्रेस के लिए सत्ता परम चीज है उसे जैसे भी हो हासिल करो, धर्मनिरपेक्ष, वैज्ञानिक विचारधाराएं उनके लिए अब गौण हैं!

नई वास्तविकता यह है कि यूपी के दलितों का समर्थ हिस्सा, सीधे आरएसएस की ओर आरएसएस भागता नजर आ रहा है, इनमें अनेक करोड़पति दलित भी हैं। उदीयमान दलित मध्यवर्ग को आरएसएस सीधे प्रभावित करने की कोशिश में है। आरएसएस के लोग लेह-लद्दाख के अनुभवों को यूपी के दलितों में लागू करने जा रहे हैं। लेह-लद्दाख में हिन्दुओं के न्यूनतम वोट भी न होने पर भाजपा ने लोकसभा सीट जीतकर दिखाई है और वहां पर उसने यह खेल सिर्फ नोटों के बल पर किया, बड़े पैमाने पर वोटरों को अपने साथ ले जाने में उसे मदद मिली।

नोटों का खेल सबसे बड़ा खेल है, नोटबंदी के बाद एक ही पार्टी नोटों के खेल में सबसे आगे है वह है भाजपा। इसलिए दलितों -अल्पसंख्यकों की बस्तियों में नोटों के खेल को रोकने के लिए, विशेष निगरानी रखने की जरूरत है।

लेह-लद्दाख में मैंने एक सप्ताह तक घूमकर निचले स्तर पर यह पाया कि बड़े पैमाने पर भाजपा ने 2014 के लोकसभा चुनाव में नोट बांटकर वह सीट जीती थी, प्रत्येकदाता में 1500 रूपये बांटा गया, पैसा कांग्रेस-पीपुल्स कॉफ्रेंस ने भी बांटा था, लेकिन 1000 रूपये प्रति मतदाता की दर से, नोटों की बर्षा ने अंततः राजनीति की हत्या कर दी, नोटों को जिता दिया, समाज को लोभी बना दिया, लेह-लद्दाख में दोनों दलों से जनता ने नोट लिए. यूपी को बचाना है तो नोटों की राजनति को बेनकाब करो।

आरएसएस की विचारधारा को कम करके नहीं आंकना चाहिए, खासकर दलितों और अल्पसंख्यकों पर उसके असर की अनदेखी नहीं करनी चाहिए। भारत में हिन्दुत्ववादी विचारधारा का कितना गहरा असर है यह संघ-भाजपा के इन समुदायों पर असर को देखकर ही समझ सकते हैं, यह असर तब है जबकि ऋस्स ने दलितों-अल्पसंख्यकों के लिए कोई बुनियादी सुधार का काम नहीं किया। इसका अर्थ है साम्प्रदायिक विचारधारा सिर्फ हिन्दुओं को ही नहीं गैर हिन्दुओं को भी प्रभावित करती है।

अभी तक हिन्दुत्ववादी विचारधारा के असर से हमलोग शिक्षित मध्यवर्ग को मुक्त नहीं कर पाए हैं, ऐसे में अनपढ़ लोगों में उसके असर को हम इतनी जल्दी कैसे मुक्त कर पाएंगे इस पर सोचना चाहिए. ऋस्स -भाजपा ने भय, लोभ और यथास्थितिवाद की त्रिकोणीय रणनीति के जरिए दलितों-अल्पसंख्यकों को पटाने में महारत हासिल की है. वे सब समय विचारधारा का उनको पटाने के लिए इस्तेमाल नहीं करते बल्कि लोभ और भय का व्यापकतौर पर इस्तेमाल करते हैं।

वे नोटों के खेल के जरिए अपना उल्लू सीधा करने में सफल रहे हैं। नोटों का खेल कारपोरेट घरानों की मदद के बिना खेलना संभव नहीं है। दलितों की राजनीति को तमिलनाडु में नोटों के खेल ने प्रदूषित किया और जयललिता नामक फिनोमिना को जन्म दिया, करप्शन को लोकतंत्र की आड़ में महान बनाया, करप्शन से नफरत करने की बजाय हम सब प्रेम करने लगे. यही दशा यूपी आदि में भी है।

कम्युनिस्टों का जिन राज्यों में सामाजिक-राजनीतिक प्रभाव रहा है वहां पर दलितों -अल्पसंख्यकों के ऊपर हमलों की घटनाएं बहुत कम हुई हैं, यह संयोग नहीं है,बल्कि कम्युनिस्ट राजनीतिक सच्चाई है कि वंचितों को ऊँचा सिर करके जीने में उनसे मदद मिली है। अछूतों का अधिकांश हिस्सा बंगाल में अछूतों की तरह नहीं मनुष्यों की तरह सोचता है,यह सब बनाने में कम्युनिस्टों के संघर्षों की बड़ी भूमिका है।बंगाल,केरल और त्रिपुरा में दलित सबसे ज्यादा सुरक्षित हैं और सम्मान के साथ।

वामदलों ने सबसे पहले देश में संयुक्त मोर्चे की राजनीति शुरु की और आज यह सच है कि सभी दल इस राजनीति के अंग हैं ,कोई यूपीए ,कोई एनडीए, और कोई थर्डफ्रंट कर रहा है । वामदल देश का सही भविष्य देख पाते हैं यह बात इससे पुष्ट होती है ।वामदलों से डरने या घृणा करने या पूर्वाग्रहों के आधार पर देखने की ज़रुरत नहीं है । वे इस बार पहले से भी बेहतर सामाजिक -आर्थिक सुरक्षा देंगे । वाम दलों का दबाव ही है कि कांग्रेस को सब्सिडी केन्द्रित राजनीति पर लौटना पड़ा ,सब्सिडी ख़त्म और देश चलाओ की कांग्रेस की नव्य उदारनीतियां पिट गयी हैं।

आर्थिक -सामाजिक विकास और संतुलन के लिए सब्सिडी बेहद ज़रुरी है यह बात वामदल लगातार उठाते रहे हैं और आज सभी दल ख़ासकर कांग्रेस -भाजपा वाम के सुझावों की महत्ता मान रहे हैं और विकास -विकास ,सब्सिडी -सब्सीडी कर रहे हैं ।कहते हैं मज़दूरों किसानों के संघर्ष बेकार नहीं जाते ! यह सब उसका दबाव है।

अंत में , अ-लोकतांत्रिक विचार,अ-राजनीति की राजनीति और अ-लोकतांत्रिक नायक के प्रति भक्तिभाव युवाओं में अवसाद,अशांति और असभ्यता पैदा करता है। युवाओं को इनसे बचना चाहिए।

# दो बैरिस्टर: गांधी और पटेल

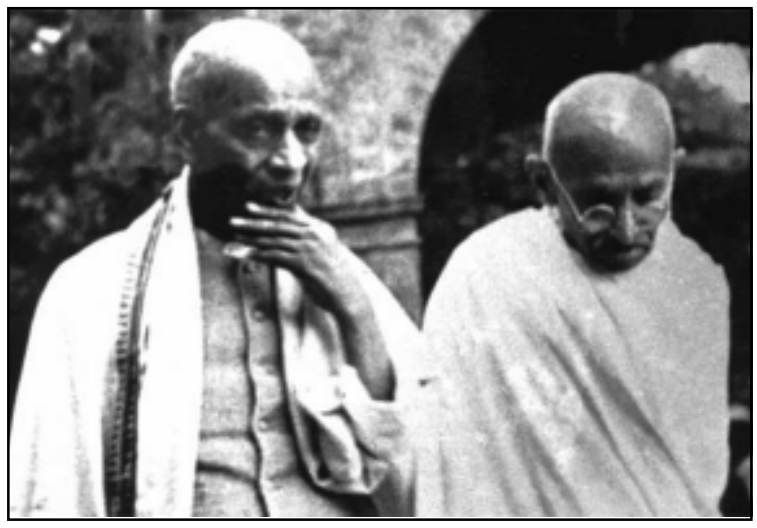

**साथ गुजरात, क्लब में ब्रिज टेबल पर थे. उसी समय गांधी गुजरात क्लब आए और मावलंकर ब्रिज छोड़कर गांधी की तरफ बढ़े. पटेल ने कहा कि कहां जा रहे हो, हमारा खेल देखोगे तो ज्यादा कुछ सीख जाओगे. मैं बताता हूँ कि वह क्या कहेगा. वह कहेगा कि अगर तुम जानते हो कि गेहूं से कंकड़ को कैसे शिफ्ट किया जा सकता है, इससे स्वतंत्रता मिल जाएगी!**

**यह गांधी पटेल का शुरुआती मिलन था और उसके बाद तो पटेल ऐसे गांधीवादी बने कि लोग यह भी भूल गए कि पटेल पढ़े लिखे हैं या उन्होंने धोती कुर्ता के अलावा भी कुछ पहना है!**

**वल्लभभाई पटेल जुलाई 1910 में इंग्लैंड चले गए. लंदन लॉ कॉलेज के मिडल टेंपल में लॉ में एडमिशन लिया. यहीं से महात्मा गांधी, मोहम्मद अली जिन्ना, विट्ठल भाई पटेल ने इस या किसी दूसरे इन् में पढ़ाई की थी और 1910 में ही जवाहरलाल नेहरू ने भी यहीं के इनर टेंपल में बैरिस्टर की पढ़ाई के लिए प्रवेश लिया.**

**हालांकि पढ़ाई के दौरान नेहरू और पटेल कभी एक दूसरे से मिले हों, इसका उल्लेख नहीं मिलता.**

**दिसम्बर 1912 में टॉप करने के साथ अपनी बैरिस्टर की पढ़ाई पूरी की और 13 फरवरी 1913 को वह बम्बई आ गए, जहां वह अपने बड़े भाई विट्ठलभाई की निगरानी में अपने साढ़े पांच साल के बेटे डाहया और 7 साल की बेटी मणिबेन को बोर्डिंग स्कूल में छोड़कर पढ़ाई करने गए थे.**

**विट्ठल बॉम्बे काउंसिल के मेम्बर बन चुके थे. तय हुआ कि विट्ठल समाजसेवा करेंगे और वल्लभ घर चलाएंगे.**

**1916 तक वल्लभ अहमदाबाद के सबसे महंगे वकील बन गए. उन्हें ब्रिज खेलने का शौक ही नहीं था, बल्कि इस खेल में चैम्पियन हो गए थे. मेसर्स वाडिया ने उनसे बाजी लगाई और पटेल ने 2 दिन में उनसे 50 पाउंड जीत लिए. मिसेज वाडिया के अनुरोध पर पटेल माने और खेल रोका गया.**

**अमदाबाद के कलेक्टर गोडफ्रे डेविस, पटेल के मिडल टेंपल के मित्र थे. उस समय पटेल क्रिमिनल केसेज के जाने माने वकील थे जिन्हें गोल्फ खेलना, केस लड़ना, गुजरात क्लब में इलीट तबके के साथ बैठकें करना,सूट बूट पहनना, नेक टाई बांधना पसन्द था.**

**इसी बीच अहमदाबाद की जमीन पर 1915 में एक और बैरिस्टर मोहनदास करमचंद गांधी उतरे, जो 22 साल दक्षिण अफ्रीका में बिता चुके थे. कुछ महीने में ही जब गांधी को महात्मा कहा जाने लगा तो पटेल की प्रतिक्रिया थी, वी आलरेडी हैव टू मेनी महात्माज.**

**गांधी के सत्याग्रह का भी पटेल ने मजाक उड़ाया.**

**एक दिन पटेल अपने साथी बैरिस्टर जीवी मावलंकर के**

# बजट : धोती खोलकर पगड़ी बांधना

# अराजनीतिक बुद्धिजीवी

-ओत्तो रेने कास्तिलो

**एक दिन**
**हमारे देश के**
**अराजनीतिक बुद्धिजीवियों से**
**पूछताछ करेंगे**
**हमारे सबसे सीधे-सादे लोग.**
**उनसे पूछा जायेगा**
**कि उन्होंने क्या किया**
**जब उनका राष्ट्र**
**मरता रहा धीरे-धीरे,**
**सुलगता धीमी आँच में,**
**निर्बल और अकेला.**
**कोई भी उनसे नहीं पूछेगा**
**उनकी पोशाक के बारे में,**
**दोपहर में खाकर**
**सुस्ताने के बारे में,**
**कोई नहीं जानना चाहेगा**
**शून्य के विचार के साथ**
**उनके बंजर मुकाबलों के बारे में.**
**परवाह नहीं करेगा कोई भी**
**उनकी महँगी ऊँची पढ़ाई की.**
**नहीं पूछा जायेगा उनसे**
**यूनानी मिथकों के बारे में.**
**या उस आत्म-घृणा के बारे में**
**जो उत्पन्न होती है उस समय**
**जब उन्हीं में से कोई**
**शुरू करता है**
**कायरों की मौत मरना.**
**कुछ भी नहीं पूछा जायेगा**
**उनके बेहूदे तर्कों के बारे में,**
**जो सफ़ेद झूठ के साये में**
**पनपते हैं. उस दिन**
**सीधे-सादे लोग आयेंगे.**
**जिनके लिए कोई जगह नहीं थी**
**अराजनीतिक बुद्धिजीवियों की**
**किताबों और कविताओं में,**
**लेकिन रोज पहुँचाते रहे जो**
**उनके लिए ब्रेड और दूध,**
**तोर्तिला और अण्डे,**
**वे जिन्होंने उनके कपडे सिले,**
**वे जिन्होंने उनकी गाड़ी चलाई,**
**जिन लोगों ने देख-भाल की**
**उनके कुत्तों और बागवानी की**
**और खटते रहे उनकी खातिर,**
**और वे लोग पूछेंगे-**
**क्या किया तुमने जब गरीब लोग**
**दुःख भोग रहे थे,**
**जब उनकी कोमलता**
**और जीवन जल रहा था**
**भीतर-भीतर ?**
**मेरे मधुर देश के**
**अराजनीतिक बुद्धिजीवीयो,**
**तुम कोई जवाब नहीं दे पाओगे.**
**चुप्पी का गिद्ध**
**तुम्हारी आँतों को चबायेगा,**
**तुम्हारी अपनी दुर्गति**
**कचोटेगी तुम्हारी आत्मा.**
**और लाज के मारे**
**मौन रह जाओगे तुम.**

( अनुवाद- दिगम्बर )